भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 **दिसम्बर** 2001 **अंक** 12

इतिहासकार जो लिखे जरूरी नहीं कि वह शाश्वत सत्य ही हो। मुझे बताया गया है कि संशोधन श्री एस०वी० चह्वण कमेटी की सिफारिशों पर हुए हैं और इसलिए मैं मानता हूँ कि वे साम्प्रदायिक सिफारिशें नहीं हो सकतीं। आर्य गोमांस खाते थे या नहीं यह इतिहासकारों के बीच बहस का विषय हो सकता है और इसे स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़ाया जा सकता है। लेकिन स्कूली स्तर पर यह सब नहीं पढ़ाया जाना चाहिए।

—चन्द्रशेखर
भूतपूर्व प्रधानमंत्री

❑ ❑ ❑

यदि पाठ्य-पुस्तकों में हमारे महापुरुषों के बारे में कुछ गलत बाते हैं तो उन्हें हटाना गलत नहीं है। आर्य लोग कहाँ से आये इस पर आज तक विवाद है इसलिए क्या पढ़ाया जाए इसके लिए कोई एक नीति बनानी होगी।

—शिवराज पाटिल
पूर्व अध्यक्ष, संसद

❑ ❑ ❑

दिल्ली विधानसभा ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव किया हुआ है कि सिख गुरुओं से सम्बन्धित गलत बातें पाठ्य-पुस्तकों से हटाई जाएँ और हमने जब ऐसा कर दिया तो हम पर ही आरोप लगाये जा रहे हैं। **—प्रमोद महाजन**

❑ ❑ ❑

हमारी जन्मभूमि थी यही, कहीं से हम आये थे नहीं।
जातियों का उत्थान-पतन आँधियाँ, झड़ी, प्रचंड समीर।
खड़े देखा झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर।
चरित के पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न।
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।
हमारे संचय में था दान, अतिथि ने सदा हमारे देव।
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान।
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य्य-संतान।
जियें तो सदा उसी के लिए यही अभिमान रहे यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।

—जयशंकर 'प्रसाद'

राजनीति, राजनीति, राजनीति

आज राजनीति देश का पर्याय बन गई है, प्रत्येक क्षेत्र में राजनीति व्याप्त है। देश के तथाकथित बुद्धिजीवी मार्क्सवादी विचारधारा और पश्चिम के ज्ञान से प्रभावित इस देश के इतिहास तथा संस्कृति को विकृत करने और देश की अस्मिता को खतरे में डालने में लगे हैं। सत्ता के व्यामोह ने राजनीति को और प्रखर बनाया है। देश का इतिहास राजनीति का माध्यम बन गया है। अंग्रेजी शासन ने देश के इतिहास को अधोगामी दिखाकर देश की जनता का नैतिक पतन करने का प्रयास किया। आज सत्ताविहीन राजनीतिक पार्टियाँ यही कर रही हैं।

एन०सी०ई०आर०टी० की इतिहास पुस्तकें आज चर्चा का विषय बन चुकी हैं। इन पाठ्य-पुस्तकों में बालक-बालिकाओं को पढ़ाया जा रहा है कि प्राचीन भारत में गोमांस खाया जाता था, ब्राह्मण भी गोमांस खाते थे, क्या यह बताकर आज गोमांस खाने का औचित्य सिद्ध किया जा रहा है। दिल्ली के एक विद्वान् ने तो प्राचीन भारत में गोमांस पर एक ग्रन्थ ही प्रकाशित कर डाला है। लिखा गया है तेग बहादुर लुटेरे थे, शिवाजी डकैत थे, जाट समुदाय गुण्डागर्दी करते थे। ऐसी कितनी ही बेसिर पैर की बातें तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर लिखी गई हैं। 1857 के युद्ध को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के स्थान पर उसे विद्रोह बताया गया।

प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने इस पर आपत्ति की है और इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों में ऐसी भ्रामक बातों को हटाने की बात कही है। मार्क्सवादी इतिहासकारों ने कैसे-कैसे तथ्य प्रगट किये हैं कि हिन्दुओं पर लगाया गया जजियाकर उनके उत्पीड़न के लिए लगाया गया था ताकि वे इस्लाम कबूल कर लें, किन्तु इन मार्क्सवादी विद्वानों ने हिन्दुओं पर लगाये गये जजिया कर को सैनिक सेवा के मूल्य में लगाया गया बताया है। कैसी सैनिक सेवा? हिन्दुओं को क्या हिन्दुओं से ही खतरा था। कहा गया है कि लोगों ने स्वेच्छा से धर्मान्तरण किया, राजनीतिक और आर्थिक लाभ के लिए। यदि यह सत्य है तो यही परम्परा आज भी इन मार्क्सवादी विद्वानों और उनके समर्थक तथाकथित राजनीतिज्ञ तथा राजनीतिक पार्टियाँ सत्ता तथा आर्थिक लाभ के लिए ऐसे गलत तथ्यों का समर्थन कर रही हैं। व्यक्तित्व विहीन राष्ट्र विश्व में अपना कोई स्थान नहीं बना सकता।

कुछ महीने पूर्व 'जीनोम रिसर्च' में प्रकाशित 'जेनेटिक इवीडेन्स ऑन दि ओरिजिन्स ऑफ इण्डियन कास्ट पापुलेशन' (भारतीय जाति व्यवस्था के आनुवंशिक प्रमाण) लेख में अमेरिका के उटाह विश्वविद्यालय के माइकल बमशाड तथा उनके सत्रह सहयोगी ने दावा किया है कि पश्चिम यूरेशिया से भारत में प्रविष्ट इंडो-यूरोपियन भाषियों ने ही हिन्दू वर्ण व्यवस्था को जन्म दिया और स्वयं को ऊँची श्रेणी के वर्ण में स्थापित कर लिया।

इसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि भारत पर आर्यों का आक्रमण और वर्ण की जाति में संक्रमण के सिद्धान्त दोनों ही आनुवंशिकी द्वारा प्रमाणित हो गये हैं। इस प्रकार विश्व स्तर पर एक पूरा षड्यंत्र इस देश के इतिहास और संस्कृति को विकृत करने के लिए किया जा रहा है।

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल डॉ० सम्पूर्णानन्द, ने आर्यों का आदि देश भारत था, उसे भौगोलिक, पुरातात्विक तथा वैदिक पौराणिक ग्रन्थों के आधार पर सिद्ध किया है। फिर भी मार्क्सवादी अपनी इयत्ता बनाये रखने के लिए और सत्ताविहीन राजनीतिज्ञ इसे अपनी विजय पताका बनाना चाहते हैं।

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष भाग

समाज और देश में सौहार्द बनाये रखने के लिए इतिहास के कठोर तथ्यों को यथासम्भव उजागर नहीं करना चाहिए। हर युग में इतिहास विवादग्रस्त होता है क्योंकि उस युग की अपेक्षा इतिहास पूर्ण नहीं कर पाता। मर्यादित इतिहास ही सार्थक होता है। ब्रिटिशकालीन इतिहासकार जिन्हें भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करना था उन्होंने जिस प्रकार भारतीय इतिहास का उपयोग किया, उस परम्परा से दूर हटकर स्कूली छात्रों की पुस्तकों में इतिहास को संतुलित ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए ताकि उनके मन पर उनके संस्कारों के विपरीत प्रभाव न पड़े। श्री चन्द्रशेखरजी ने ठीक ही कहा है कि विवादित विषय स्नातकोत्तर स्तर पर ही पढ़ाये जाने चाहिए, स्कूली स्तर पर नहीं।

देश में राजनीति ने बौद्धिक माफियावाद का सृजन कर दिया है जिसका सहारा राजनीतिक पार्टियाँ ले रही हैं। अभी तक भगवाकरण, फासिस्टवादी शब्दों का प्रयोग किया जाता था अब तालिबानीकरण शब्द इसी श्रेणी में आ गया है। राजनीतिज्ञों संसद के प्रत्येक सत्र में ऐसे ऐसे शब्दों का सृजन कर रहे हैं और नये संसदीय कोश की रचना कर रहे हैं।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

इतिहास एक सामाजिक विज्ञान है। जिस प्रकार विज्ञान वरदान और अभिशाप दोनों है, उसी प्रकार ऐतिहासिक तथ्यों का उपयोग समाज के निर्माण और विध्वंस दोनों के लिये हो सकता है। इतिहास के विवादित अंश उच्च स्तर के चर्चा और समीक्षा की चीज हैं। सामान्य विद्यार्थियों को उन्हीं तथ्यों से अवगत कराना चाहिए, जो उनके लिये ग्राह्य हों। इतिहास तभी उपयोगी सिद्ध होगा जब उसका उपयोग राष्ट्र हित के लिये किया जाए। अनेक देशों ने अपने राष्ट्रीय हित के हिसाब से ही इतिहास लिखा है। इतिहास की घटनाएँ हमें प्रेरणा देती हैं और व्यक्ति व समाज के निर्माण में सहायक होती हैं। पूर्वाग्रह से ग्रसित एक पक्षीय इतिहास लिखने की मान्यता नहीं दी जा सकती। इस दृष्टि से अगर एन०सी०आर०टी० के इतिहास में संशोधन हो रहा है तो ठीक है।

—प्रो० परमानन्द सिंह
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ

साहित्यिक समाचार

राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का 17वाँ राष्ट्रीय सम्मेलन छः दिसम्बर को नयी दिल्ली स्थित ताल कटोरा स्टेडियम में सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन सम्मान दिवस तथा दूसरा दिवस अधिकार दिवस के रूप में मनाया गया। सम्मेलन का उद्घाटन हरियाणा के राज्यपाल बाबू परमानन्द, अध्यक्षता अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री माताप्रसाद तथा समापन हिमाचल के राज्यपाल श्री सूरजभान ने किया।

मेनका ने मानहानि का मुकदमा जीता

केन्द्रीय मंत्री मेनका गाँधी ने इन्दिरा गाँधी पर किताब लिखने वाले लेखक कैथरीन फ्रैंक और उसके प्रकाश के खिलाफ दायर मानहानि का एक मुकदमा जीतकर एक बड़ी कानूनी जंग आज जीत ली। इन दोनों ने लन्दन उच्चन्यायालय में न सिर्फ माफी माँगी बल्कि किताब में इन्दिरा गाँधी और मेनका गाँधी के पति संजय गाँधी के खिलाफ कुछ अपमानजनक शब्द लिखने पर अच्छा खासा मुआवजा देने पर भी राजी हुए। फ्रैंक और उसकी लिखी किताब 'इन्दिरा-द लाइफ आफ इन्दिरा नेहरू गाँधी' के प्रकाशक हार्पर कोलिंस ने अपने वकील के जरिये अदालत को बताया कि किताब में की गयी टिप्पणियों से मेनका के सम्मान और उनकी भावनाओं को जो चोट पहुँची है, उसके लिए वे अच्छा-खासा मुआवजा देंगे और माफी के साथ इस मामले पर मेनका ने जो खर्चा किया है, उसे भी चुकायेंगे।

अब आसानी से पहुँचा जा सकेगा वीरों-साहित्यकारों से जुड़े स्थानों पर

उत्तर प्रदेश सरकार साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े पुरोधाओं की जन्म व कर्मभूमि को जोड़ने वाले एक परिपथ के निर्माण पर गम्भीरता से विचार कर रही है। राज्य पर्यटन निगम के उपाध्यक्ष डॉ० दिनेश शर्मा ने बताया कि राज्य में जन्म लेने वाले शूरवीरों और साहित्यकारों से सम्बन्धित स्थलों को जोड़ते हुए 'शौर्य व साहित्य परिपथ' बनाने पर गम्भीरता से विचार किया जा रहा है। साहित्यकारों से जुड़े स्थानों को साहित्य परिपथ से जोड़ने की योजना बन रही है उनमें मुख्य रूप से तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, संत रविदास, संत मलूकदास, महाकवि घाघ, पद्माकर, भूषण, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, प्रताप- नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, मदनमोहन मालवीय, आचार्य महावीरप्रसाद, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, मैथिलीशरण गुप्त, मुंशी प्रेमचंद, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', रामचन्द्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, मिर्जा गालिब, अकबर इलाहाबादी, हसरत मोहानी, जोश मलिहाबादी और फिराक गोरखपुरी आदि शामिल हैं।

❑ ❑ ❑

प्रश्न है क्या दलितों की राजनीति में संलग्न सरकार यह कर सकेगी? सरकार की योजना बनी थी साहित्यकारों की मूर्तियाँ लगाई जायँगी, आज वह योजना भी दाखिल दफ्तर हो गई। जिन मूर्तियों को स्थापित करने, पार्क बनवाने, द्वार बनवाने से राजनीतिक लाभ मिले उसे ही प्रधानता दी जाती है। साहित्यकारों की समाधि उनकी कृतियाँ ही बन गई हैं जिन पर कभी हम सद्भाव के दो शब्द अर्पित कर देते हैं। काशी का बेनियापार्क जयशंकर प्रसाद तथा प्रेमचंद की भ्रमण स्थली थी, वह राजनारायण पार्क बन गया, मूर्ति भी लग गई परन्तु प्रसादजी गोवर्धन सराय से बाहर नहीं निकल सके।

—सम्पादक

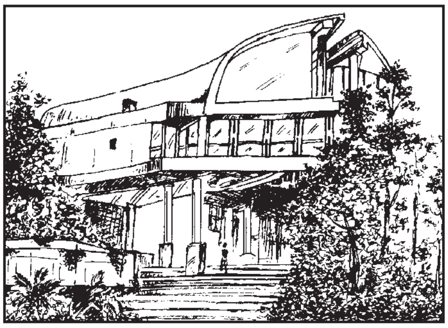

ज्ञान प्रवाह

काशी में गंगातट पर काशी की गरिमा का उजागर करने वाली 'ज्ञान प्रवाह' नामक सांस्कृतिक संस्था की स्थापना 1996 में कलकत्ता के उद्योगपति श्री सुरेश नेवटिया की अध्यक्षता तथा श्रीमती विमला पोद्दार के मंत्रित्व में की गई। वर्षपर्यन्त समय-समय पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम इस संस्था द्वारा आयोजित किये जाते हैं।

पिछले दिनों 1 नवम्बर को संस्कृति अध्ययन केन्द्र 'ज्ञान प्रवाह' प्रतीची का लोकार्पण उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विष्णुकांत शास्त्री ने किया। इस अवसर पर शास्त्रीजी ने कहा—''एक समय ऐसा आया जब पृथ्वी से हमारी संस्कृति का अंश तिरोहित हो गया। संस्कृति के उसी तिरोहित अंश को बचाने का कार्य ज्ञान प्रवाह की साधना से किया जा सकता है। ईश्वर न ज्ञान है, न अज्ञान बल्कि ज्ञान स्वयं ईश्वर है। यह धारणा सभी में मन में बसी रहनी चाहिए।

काशी अनादिकाल से भगवान शंकर के त्रिशूल पर टिकी है। पं० मदनमोहन मालवीय की शिक्षा की नगरी में मोक्षदायिनी काशी में गंगातट पर ज्ञान प्रवाह ने जो बीड़ा उठाया है वह सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। काशी को विश्व की धरोहर नगरी के रूप में घोषित किया जाय इसके लिए प्रदेश एवं केन्द्र स्तर पर मैं सार्थक प्रयास करूँगा।''

पुरस्कार-सम्मान

काका हाथरसी हास्य पुरस्कार

वर्ष 2000 का काका हाथरसी हास्य पुरस्कार दिल्ली के **डा० शेरजंग** को आयोजित समारोह में केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री वेदप्रकाश गोयल ने पुरस्कार स्वरूप 30 हजार रुपये, शाल तथा श्रीफल प्रदान करते हुए 'हास्य रत्न' की उपाधि से विभूषित किया।

अरुंधती राय को पुरस्कार

39 वर्षीय **अरुंधती राय** को को वर्ल्ड एकाडमी ऑफ कल्चर के पुरस्कार के लिए चुना गया है। इसकी घोषणा पेरिस में एकाडमी ने की। उन्हें यह पुरस्कार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा बिकने वाले उपन्यास 'दि गॉड ऑफ स्माल थिंग्स' के लिए किया गया है।

डॉ० सद्युम्न आचार्य को नामित पुरस्कार

प्रख्यात साहित्यकार **डॉ० सद्युम्न आचार्य** को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा डॉ० भगवानदास पुरस्कार प्रदान करने का निर्णय किया गया है। आपको यह पुरस्कार उनकी प्रसिद्ध कृति 'भारतीय दर्शन तथा आधुनिक विज्ञान' के लिये प्रदान किया है। यह ग्रन्थ भारतीय दर्शन के भौतिकी विषयक सिद्धान्तों की आधुनिक विज्ञान के आलोक में सर्वांग सम्पूर्ण विवेचना प्रस्तुत करता है। ग्रन्थ 5 खण्डों में विभक्त है। आधुनिक विज्ञान के सन्दर्भ में भारतीय दर्शन की प्रेरणा तथा उपादेयता को जानने के लिये यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इससे पूर्व भी इस ग्रन्थ को अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

डॉ० प्रमोद सिन्हा को साहित्यकार सम्मान

कवि कथाकार और आलोचक **डॉ० प्रमोद सिन्हा** को हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक सेवाओं के लिए 2001-2002 का साहित्यकार सम्मान 11 नवम्बर 2001 को फिक्की सभागार में प्रदान किया गया। इस सम्मान में 21 हजार रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

स्मृति-शेष

हास्य शिरोमणि 'सूंड़' नहीं रहे

हास्य को हिमालय तक पहुँचाने वाले हास्य रसावतार **श्री दान बहादुर सिंह 'सूंड़'** का 15 नवम्बर को निधन हो गया। वे काफी दिनों से बीमार थे। आजमगढ़ अस्पताल में उन्होंने चिरनिद्रा ली। एस०के०पी० इण्टर कालेज के शिक्षक सूंड़जी अपनी हास्य रचनाओं विशेषकर अखबार के समाचार शीर्षकों को लेकर हास्य व्यंग्य प्रस्तुत करने में बेजोड़ थे। सूँड़जी का जन्म 4 जनवरी 1928 को अम्बेडकर नगर (पूर्व अकबरपुर, फैजाबाद) जिले के जहाँगीरगंज में एक सामान्य परिवार में हुआ था। हास्य व्यंग्य की उनकी अपनी विशिष्ट शैली थी। कवि सम्मेलनों के संचालन की उनकी अपूर्व क्षमता थी। सम्मेलनों में उनका अभाव निरन्तर खटकता रहेगा। इस हास्य रसावतार के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ पं० मंडन मिश्र

संस्कृत विद्यापीठ (1968) वर्तमान लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ एवं प्रथम कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति पद्मश्री **मंडन मिश्र** का दीपावली के दूसरे दिन गुरुवार 15 नवम्बर 2001 को हृदय गति रुक जाने से जयपुर में निधन हो गया। जयपुर के निकट एक गाँव में 7 जून 1926 को जन्म मंडनजी संस्कृत के लिए समर्पित व्यक्ति थे। विद्वता के साथ-साथ उनमें अद्भुत प्रशासनिक क्षमता थी। भारत सरकार के संस्कृत प्रकोष्ठ के माध्यम से संस्कृत के अनेक अलुप्त ग्रंथों के प्रकाशन में उनकी विशिष्ट भूमिका थी। उनके आकस्मिक निधन से संस्कृत भाषा तथा साहित्य के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है। 'भारतीय वाङ्मय' मंडनजी के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अहिन्दी भाषी क्षेत्र की पत्रिकाएँ

अहिन्दी भाषी क्षेत्र से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। इनसे यह ज्ञात होता है कि उन क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार कितनी त्वरित गति से हो रहा है। उन्हें प्रश्रय तथा प्रोत्साहन की अपेक्षा है। ये पत्रिकाएँ संकेत करती है एक दिन हिन्दी पूर्ण रूप से सारे देश की सम्पर्क भाषा बनकर रहेगी, क्षेत्रीय भाषाओं का भी विकास होगा। जनसामान्य में अंग्रेजी की बाध्यता नहीं रह जायगी।

आंतर भारती (मासिक)
सम्पादक : गंगाधर घुमाडे
श्रीमती राजश्री योगेश
सम्पर्क : 430, शनिवार रोड, पुणे-411030
(प्रति अंक 3.00, वार्षिक 30.00)

हिन्दी आभूषण (मासिक)
सम्पादक : एस०यू० चतुर्वेदी
सम्पर्क : 16/9 हरीविला, कृष्ण नगर
अहमदाबाद-380404
(वार्षिक 100.00)

उलुपी (भाषाई समन्वय की त्रैमासिकी)
(पूर्वोत्तर में हिन्दी विशेषांक)
सम्पादक : रविशंकर रवि
सम्पर्क : बाई लेन-एक, राजगढ़ रोड
गुवाहाटी-781003 (वार्षिक 60.00)

गुर्जर राष्ट्रवीणा (मासिक)
सम्पादक : अरविन्द जोशी
सम्पर्क : राष्ट्रभाषा हिन्दी भवन, एलिसब्रिज
अहमदाबाद-6
(प्रति अंक 12.00, वार्षिक 100.00)

अन्य पत्रिकाएँ (त्रैमासिकी)

शेष
सम्पादक : हसन जमाल
सम्पर्क : पन्ना नियास के सामने, लोहारपुर
जोधपुर (वार्षिक 75.00)

उद्‌भावना (त्रैमासिक)
सम्पादक : अजय कुमार
सम्पर्क : ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया
जी०टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-95
(वार्षिक 80.00)

सहमत मुक्तनाद
सम्पादक : के०एन० पणिकर-
शबनम हाशमी तथा अन्य
सम्पर्क : 8 विट्ठल भाई पटेल हाउस, रफी मार्ग
नयी दिल्ली (वार्षिक 150.00)

पुस्तक-परिचय

हिन्दी अकादमी दिल्ली के कृति पुरस्कार से सम्मानित

श्री दयानंद वर्मा रचित उपन्यास

कलजुगी उपनिषद

दयानंद वर्मा ने जीवन के अनेक पक्षों पर लिखा है। उनमें अध्यात्म और मनोविज्ञान प्रमुख हैं किन्तु प्रस्तुत उपन्यास 'कलजुगी उपनिषद' में लेखक का जीवन दर्शन समग्र रूप में प्रकट हुआ है।

उपन्यास के आरम्भिक भाग में आज से साठ साल पहले के भारत के उस भाग की घटनाएँ हैं जो भाग आज पाकिस्तान के नाम से जाना जाता है। इस भाग में भारत विभाजन के समय के लोमहर्षक दृश्य सामने आते हैं।

उपन्यास के मध्य भाग में नायक देवराज देश-विदेश की यात्राएँ करता है। इन यात्राओं में उस पर 'भारत महान' के नारे का खोखलापन प्रकट होता है। तत्पश्चात् नायक की मानसिक यात्राएँ तन और मन की अनेक गुत्थियाँ खोलती हैं। समाज के दो रंगेपन से उसका स्वप्न-भंग होता है।

अन्तिम भाग तक आते-आते उपन्यास उपनिषद का रूप ले लेता है। इस भाग में संवाद की शैली में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, वर्ण-व्यवस्था, वर्ग-व्यवस्था, राजनीति आदि जीवन के सभी पक्षों पर लेखक के दो टूक स्पष्ट विचार सामने आये हैं। यह सब कुछ इतने रोचक ढंग से लेखक ने प्रस्तुत किया है कि पुस्तक को एक ही बैठक में पढ़कर खत्म करने को जी चाहता है।

यह उपन्यास शिल्प की दृष्टि से एक नया प्रयोग है। हिन्दी में ऐसे प्रभावशाली और सार्थक प्रयोग बहुत कम हुए हैं।

पंडितयुगीन गुजराती साहित्य

सम्पादक : डॉ० मदनमोहन शर्मा

प्रकाशक : सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर

इस पुस्तक में शर्माजी ने 4 खण्डों में पण्डित युग के प्रमुख साहित्यकारों सर्वश्री आनन्दशंकर ध्रुव, मणिलाल द्विवेदी (निबन्ध, शिक्षा, काव्य आदि), रमणभाई नीलकंठ (उपन्यास), मलयानिल (कहानी), रमणभाई नीलकंठ, डॉ० डाह्याभाई धो. झवेरी (नाटक), नरसिंहराव भो. दिवेटिया, कलापी (कविता) के गुजराती लेखों का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। गुजराती साहित्य के अध्ययन के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

पुस्तक समीक्षा

विचार-चिन्तन प्रधान
तेजरफ्तारी उपन्यास : पांचाली

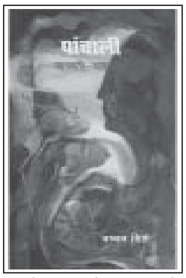

महाभारत की द्रौपदी का चरित्र भारतीय उपन्यासकारों के लिए प्र**बल आकर्षण का केन्द्र बना हु**आ है। आधे दर्जन से अधिक कथाकारों ने अपनी-अपनी कृतियों में विविध कोणों से इसे उठाया है। हिन्दी साहित्य के प्रखर आलोचक और उसके इतिहास-लेखक के रूप में विख्यात डॉ० बच्चन सिंह ने अपनी नवीनतम कृति 'पांचाली' में द्रौपदी के चरित्र को 'नारी मुक्ति आन्दोलन की नींव के पहले पत्थर' के रूप में रेखांकित है। अस्सी पार की परिपक्व आयु में आत्मकथा के शिल्प में लेखक द्वारा प्रस्तुत यह कृति अनेक कारणों से ध्यान आकर्षित करती है।

आत्मकथा शिल्प में प्राय: कथा धारा समतल पर बहने वाली नदी की धारा की भाँति समरस तथा मंद गम्भीर होती है परन्तु 'पांचाली' में जिस ताजगी भरे शिल्प का प्रयोग हुआ है वह अधिकांश स्थानों पर झटके-झपाटे से पूर्ण तेजरफ्तारी है। महाभारत की मूल कथा में डूबा द्रौपदी का अपना निजी व्यक्तित्व नये युग के अनेक रूप ऐसी प्रश्नाकुल मुद्रा में प्रस्तुत मिलता है कि जगह-जगह कथा-रस के बीच-बीच चिन्तन-रस छलकने लगता है। इस चिन्तन रस में आधुनिक बुद्धिजीवी पाठकों को आकर्षित करने की क्षमता है। यही कारण है कि प्रस्तुत रचना को वैचारिक उपन्यास की कोटि में रखना उचित प्रतीत होता है।

कृति में महाभारत की पृथक्-पृथक् घटनाओं को क्रमबद्ध किन्तु सोद्देश्य नियोजित किया गया है और यह कार्य इस रूप में प्रस्तुत हुआ है कि प्राय: हर घटना एक विचार बन गयी हे। वह विचार घूम फिर कर द्रौपदी के प्रश्नशील विद्रोही मुद्रा को उभारती है। उसे अपना जीवन एक व्यंग्य अथवा विडम्बना अथवा चुनौती जैसा प्रतीत होता है। स्वयंवर से लेकर महाप्रस्थान तक की प्राय: सम्पूर्ण महत्त्वपूर्ण घटनाओं के द्रौपदी के कोण से उभारने में लेखक को कुछ अतिरिक्त कसाव देना पड़ा है परन्तु संतुलन और सामंजस्य अन्त तक बना रहता है। छोटे-छोटे सरल वाक्यों में कहीं-कहीं कथा प्रवाह इतना तेज होता है कि पाठक डूबता है तो फिर डूबता ही चला जाता है। किन्तु इस डुबान में प्रबुद्ध अध्ययनशील मन की शर्त लगी हुई प्रतीत है। सामान्य पाठकीय चित्त की पकड़ सम्भव है। झटके झपाटे में कहीं किनारे ही पड़ी रह जाय।

उक्त पाठकीय मन को झकझोरने वाले स्थल बहुत आसानी के साथ पहचाने जा सकते हैं। वास्तव में ये बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और इन्हीं को लक्ष्य कर इस कृति को नारी मुक्ति आन्दोलन की नींव का पहला पत्थर कहा गया है। कुछ स्थलों को निम्न रूप में रेखांकित किया जा सकता है—

(1) इस उपन्यास का एक उपनाम 'नाथवती-अनाथवत्' अंकित है और अपने आप में एक जबरदस्त व्यंग्य है।

(2) ''रातभर हम लोग कुम्हार के घर ही रहे। पाँचों पाण्डव मृगचर्म बिछाकर सो गये। मैं उनके पैताने कुशासन पर सोयी। स्त्रियों का स्थान पुरातन काल से पुरुष के पैरों के नीचे है। हम सनातन धर्म का पालन कर रहे थे।'' (पृ० 3)

(3) ''माता-पिता चाहे जिस खूँटे में बाँध दें। पाँच नदियों देश की राजकुमारी के पाँच पति होने ही चाहिए। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं चुप क्यों थी? क्या इसीलिए कि मैं भारतीय मर्यादा को ढोने वाली कन्या थी?'' (पृ० 3)

(4) ''उलूपी द्वारा प्राप्त मंत्र से उन्हें ब्रह्मचर्य पालन में सुविधा हुई, युधिष्ठिर द्वारा निर्धारित धर्म-रेखा का उल्लंघन नहीं हुआ। यदि किसी स्त्री ने इस सुविधा का उपयोग किया होता तो आसमान टूट पड़ता, धरती फट जाती, आर्य-धर्म की धज्जियाँ उड़ जातीं। परतंत्रता नारी का जन्मसिद्ध अधिकार है।'' (पृ० 14)

उक्त आरम्भिक पृष्ठों के कुछ उदाहरणों की भाँति आगे भी पग-पग पर, पुस्तक के अन्त तक तीखी-तल्ख व्यंग्योक्तियों के प्रयोग चलते गये हैं और नारी-नियत की विडम्बनाओं पर प्रहार होते गये हैं। ये प्रहार बहुत सटीक और साधार होते हैं। विरोधाभासी स्थितियों को गहराई के साथ संश्लेषण मूल समालोचक व्यक्तित्व भी बहुत सजगह रहता है। 'एक औरत की चीख' वाले अध्याय के दूसरे अनुच्छेद में एक वाक्य आरम्भ में उकूलता है, 'कुरुवंश में स्त्रियों की स्थिति आरम्भ से ही दयनीय रही है।' और इसके बाद व्यापक रूप में दयनीयता के प्रमाण पर प्रमाण बहुत दूर तक इस प्रकार सामने आते जाते हैं कि परम्परावाद की धज्जी-धज्जी उड़ती जाती है। इस अध्याय का शीर्षक 'एक औरत की चीख' बहुत सार्थक है। इस चीख में पुरुष-सत्ता-प्रधान समाज व्यवस्था के प्रति विद्रोह का संदेश है और यह सन्देश ही वह 'अतिरिक्त' वस्तु है जिसे प्रस्तुत करने के लिए आधुनिक युग के एक व्यास ने पुरातन कथा को उठाया है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि बच्चन सिंह ने 'पांचाली' के भतीर मूल महाभारत की कहानी पर आधुनिकता का आरोपण किया है तथा कहानी में नयी कलम लगाकर हेरफेर हुआ है। कथाकार ने ऐसा कुछ न कर मूलकथा को ज्यों का त्यों द्रौपदी के कोण से उठाकर अपना उद्देश्य सिद्ध किया है। अलबत्ते इस पुराण-कथा को उपन्यास की अन्विति देने के लिए एक छोटा-सा उक्त प्रकार का प्रयास अन्त में हुआ है और एक कुल पाँच पंक्तियों की क्षेपक-कथा पूरी कृति के अर्थ को बदल देती है। अचानक एक विस्फोट हो जाता है और रचना को प्रेम केन्द्रित उपन्यास की अर्थवत्ता मिल जाती है। 'कौन था वह? शायद-शायद भीम' इन अन्तिम शब्दों के रचाव में कथाकार का समूचा कथा-कौशल सिमट गया है। 'शायद' लिखकर इस संदर्भ में चिन्तन करने के लिए पाठकों को भागीदार बनाया गया है और भीम का नाम लेकर अपनी पीड़ित नायिका की अन्तस्थ प्यास को चिन्हित किया गया है। आकर्षक निस्सन्देह कथा-रस में घुले प्रखर विचार-चिन्तन-प्रधान कृति 'पांचाली' नये दौर की पठनीय कृतियों में से एक है।

125.00 **—विवेकी राय**

वेद की कविता

प्रभुदयाल मिश्र

प्रकाशक :

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

पृ० संख्या : डिमाई अठपेजी 129 मूल्य : 120.00

लेखक श्री प्रभुदयाल मिश्र ने वेदों का गहन अध्ययन किया है। उन्होंने हिन्दी-प्रेमी जनता को लक्ष्य में रखकर चारों वेदों से चुनकर 37 सूक्तों का पद्यानुवाद किया है। पद्यों की शैली पुरानी न होकर आधुनिक प्रगतिशील अनुकान्त पद्य शैली है। अत: इसे प्रवहमान गद्यात्मक पद्य शैली कहा जा सकता है। पद्यों की भाषा सरल और सरस है। पद्यों का अर्थ समझने में कोई कठिनाई नहीं होती है।

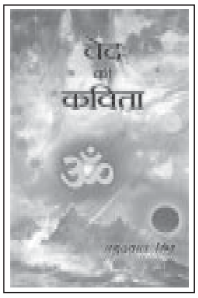

लेखक ने इन 37 सूक्तों में संवाद, सम्बोधन, प्रार्थना, दर्शन, राष्ट्र, प्रकृति, समाज और पृथ्वी से सम्बद्ध सूक्त लिए हैं। इसमें यहाँ सरमा-पणि और उर्वशी-पुरूरवा जैसे संवाद-सूक्त लिए हैं, वहाँ वाक्सूक्त, पुरुषसूक्त, नासदीय सूक्त, स्कम्भ सूक्त जैसे दार्शनिक सूक्त भी लिए हैं। समाज से संबद्ध सूर्यविवाह के दो सूक्त भी लिए हैं। प्राकृतिक वर्णन में पर्जन्य और सोम के अतिरिक्त उषा से संबद्ध सात सूक्त लिए हैं। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त (६३ मंत्र) भी लिया है। इस प्रकार विविध भावनाओं से युक्त सूक्तों का पद्यानुवाद हिन्दी-प्रेमी जनता के लिए सुन्दर उपहार है। जीवन में शान्ति और सद्भावना के लिए इन सूक्तों का पाठ श्रेयस्कर है। इस पद्यानुवाद के लिए लेखक धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है प्रबुद्ध हिन्दीप्रेमी इस ग्रन्थ को समुचित सम्मान देंगे। **—डॉ० कपिलदेव द्विवेदी**

'वेद की कविता' देखी। लेखक ने विचार, दर्शन, विश्व-बन्धुत्व और आदर्श मानवता में भारतीय मानदण्डों के निकष वेद को इस सरल कृति द्वारा जनमानस को उपलब्ध कराने का सराहनीय प्रयास किया है। **—सुमित्रा महाजन**

★ ★ ★

आपकी वैदिक कविता की बानगी मिली जिसकी भाषा पारदर्शी और गम्भीर है। मुझे अच्छी लगी। मुझे विश्वास है कि आपकी इस रचना का आदर होगा। **—विद्यानिवास मिश्र**

★ ★ ★

वैदिक स्वरलहरी ही कविता है।

मुझे खुशी है कि श्री मिश्रजी ने वैदिक ऋचाओं में व्यक्त स्वर्गीय गंगा को हिन्दी के धरातल पर लाने का भगीरथ जैसा प्रयास किया है और वे उसमें सफल हुए हैं।

श्री मिश्रजी ने वैदिक ऋषियों की मूल संकल्पनाओं को अपनी शैली में ईमानदारी से अभिव्यक्ति दी है जिससे सामान्य पाठकों को वेद जैसी धरोहर को आत्मसात् करने में अब सुगमता होगी। वेद मानव मात्र के ग्रन्थ हैं। संकीर्णता की ग्रन्थि से वे मुक्त हैं। उनका यह काव्यमय संस्करण पाठकों को अभिनव सौन्दर्य-बोध करायेगा। इसमें एक अपौरुषेय अभिव्यक्ति को पौरुषेय हिन्दी की पंक्तियों में समेटा गया है। मेरी संस्तुति है। एक अच्छे प्रस्तुतीकरण के अनन्तर स्तुतीकरण ही स्वाभाविक परिणति है। **—प्रभाकरनारायण कवठेकर**

अंतरंग संस्मरणों में 'प्रसाद'

पुरुषोत्तमदास मोदी

150.00

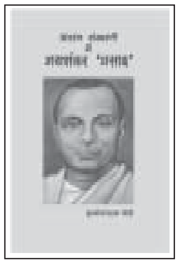

जयशंकर 'प्रसाद' अपने कृतित्व में साक्षात् शंकर थे। शिव की भाँति उन्होंने कंठ में गरल और मस्तक पर चन्द्र धारण कर अपनी रचनाओं में पावन गंगा की धारा प्रवाहित की।

प्रसादजी के अन्तरंग मित्रों एवं साहित्यकारों के क्षेत्र अत्यन्त सीमित थे। साहित्यिक समारोहों से दूर रहने और मौन धारण करने वाले प्रसादजी को निज रूप से बहुत कम जाना गया। उनकी कोई जीवनी भी प्रकाशित नहीं हुई। उनके समकालीनों द्वारा लिखे गये विभिन्न संस्मरणों में प्रसादजी के जीवन की झलक मिलती है। वे सभी संस्मरण एकत्र रूप से प्रसादजी के व्यक्तित्व और कृतित्व की झाँकी प्रस्तुत करते हैं।

प्रसादजी के समकालीन डॉ० राजेन्द्रनारायण शर्मा, डॉ० सीताराम चतुर्वेदी, मैत्रेयी सिंह आज हमारे बीच हैं, उनके संस्मरणों में प्रसादजी के अनछुए प्रसंग, प्रसादजी के व्यक्तित्व और उनकी प्रेरणा को व्यक्त करते हैं।

आशा है ये संस्मरण प्रसादजी के साहित्य को अभिनव प्रकाश प्रदान करेंगे।

महाभारत का कालनिर्णय

डॉ० मोहन गुप्त

200.00

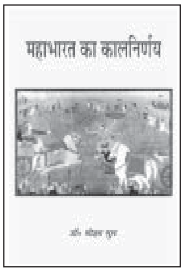

महाभारत भारतीय सभ्यता के वर्तमान दौर की आधारशिला है। वह भारत के प्रागितिहास तथा इतिहास का सेतु है। वैदिककाल की इयत्ता है। पुराणों में महाभारतोत्तर राजाओं के लिये भविष्यत् काल का प्रयोग किया गया है तथा उससे पूर्व के राजाओं के लिये भूतकाल का। अत: महाभारत हमारे वर्तमान तथा अतीत दोनों की देहली पर अवस्थित उभय प्रकाशक है। इसलिये देश के इतिहास तथा उसकी आनुपूर्वी को समझने के लिये महाभारत युद्ध का काल निर्णय नितान्त आवश्यक है।

इस सम्बन्ध में अभी तक जो प्रयास हुए हैं वे या तो कलियुगारंभ की परम्परा को ध्यान में रखकर उसकी पुष्टि में हुए हैं या वराहमिहिर-कल्हण की मान्यता के पोषण में हैं। कुछ लोगों ने पुराणों की वंशावलियों के आधार पर काल निर्धारण किया है तो कुछ ने ज्योतिष के आधार पर। किन्तु अब तक हुए सभी प्रयास अनेक प्रश्न अनुत्तरित छोड़ जाते हैं। उदाहरणार्थ कलियुगारंभ की परम्परा पुराणों के इस स्पष्ट उल्लेख के विरुद्ध है कि परीक्षित् तथा महापद्मनन्द के बीच बीस या बाईस राजा हुए जिनकी कुल अवधि 1500 वर्ष है।

वराहमिहिर-कल्हण की परम्परा की व्याख्या में ही अनेक मतभेद हैं तथा प्रचलित व्याख्या पुराणों की परम्परा के प्रतिकूल है तथा दोनों परम्परायें इस पुरातात्विक तथ्य के विरुद्ध हैं कि सरस्वती नदी ईसापूर्व लगभग 2000 में सूख गई थी तथा महाभारत में सूखी सरस्वती का उल्लेख स्थान-स्थान पर है। वंशावलियों में औसत 18 वर्ष से 40 वर्ष तक लिया गया है जो कभी कोई निश्चित निष्कर्ष नहीं दे सकता। जो प्रयास ज्योतिष के आधार पर हुए हैं उनमें किसी ने भी प्रस्तावित तिथि का ग्रह स्पष्ट नहीं किया अत: उनमें परस्पर विरोधाभास है तथा वे तार्किक परिणति तक नहीं पहुँच सके।

पहली बार इस ग्रन्थ में अब तक प्राप्त सभी प्रमाणों—ऐतिहासिक, पौराणिक, पुरातात्विक तथा ज्योतिष सम्बन्धी—की समीक्षा करके ठोस गणितीय आधार पर महाभारत का काल निर्धारण किया गया है। इसमें न केवल महाभारत की वास्तविक तिथि, नक्षत्र, वार दिनाङ्क दिये गये हैं अपितु अवान्तर घटनाओं की भी तिथियाँ, श्रीकृष्ण तथा सभी पाण्डवों की जन्म तिथियाँ, वनवास की अवधि, विवाद का कारण विभिन्न वीरों के निर्वाण की तिथियाँ तथा श्रीकृष्ण एवं पाण्डवों के महाप्रयाण तक की सम्पूर्ण विगत दी गई है। ये निष्कर्ष न केवल महाभारत के ज्योतिष विषयक सन्दर्भों के अनुरूप हैं अपितु अभी तक उपलब्ध तत्सम्बन्धी सभी प्रमाणों के भी अनुरूप हैं। लेखक ने महाभारत काल का पञ्चाङ्ग ही बना दिया है जो महाभारत में दी गई ग्रहस्थिति से मेल खाता है।

भारतीय इतिहास संस्कृति तथा सभ्यता के अध्येताओं तथा सामान्य प्रबुद्ध पाठक के लिये भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है तथा उनकी अनेक जिज्ञासाओं को शान्त कर बुद्धि को विश्राम देने वाली है।

हिन्दी संतकाव्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० प्रो० वासुदेव सिंह

380.00

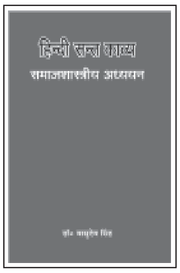

हिन्दी संत काव्य मूलत: भारतीय चिन्तन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, सहस्रों वर्षों की आध्यात्मिक चिन्ता का प्रतिफलन है तथापि इसको व्यापक स्वरूप प्रदान करने का श्रेय तत्कालीन सामाजिक अव्यवस्था है। वस्तुत: सामाजिक दृष्टि से यह न्याय और समानता का आंदोलन है। वर्णाश्रम-व्यवस्था में पिसती, ऊँच-नीच की भेद-भावना में कराहती तथा-कथित अस्पृश्य समझी जाने वाली जाति का आन्दोलन है, जो वर्ग-वैषम्य के अन्यायपूर्ण जुए को उतार फेंकने के लिए व्याकुल हो रही थी।

संत-काव्य मूलत: लोकजीवन का काव्य है, जिसमें समाज के दलित-उपेक्षित-शोषित वर्ग की पीड़ा और उसकी इच्छा-आकांक्षाओं को मुखरित किया गया है; धर्म के नाम पर समाज में व्याप्त कुरीतियों, बाह्याचारों और पाखण्डों पर तीखा प्रहार किया गया है, मनुष्य-मनुष्य में भेद उत्पन्न करने वाली मिथ्या चहारदीवारी को भग्न किया गया है, मुल्ला-पुरोहितों के प्रभुत्व की धज्जियाँ उड़ाई गई हैं, समता, बन्धुत्व-भावना और मानवतावाद का शंखनाद किया गया है, नागर-संस्कृति की अपेक्षा बहुसंख्यक ग्राम-समाज को प्रमुखता दी गई है तथा राजनीतिक पराभव और सामाजिक वैषम्य से हताश लोक जीवन में नूतन स्फूर्ति और आशा का संचार किया गया है।

इन संतों ने ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता और सर्वव्यापकता का उद्घोष करते हुए परम सत्य को निर्द्वन्द्व-निर्भीक वाणी में अभिव्यक्त किया तथा मिथ्या धारणाओं का कठोर शब्दावली में खण्डन किया। इस प्रकार इन्होंने मानव-समाज के सामूहिक कल्याण की चर्चा की और धर्म-निरपेक्ष सामाजिक व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया। इसीलिए वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिवेश में संत-काव्य के वैचारिक मूल्यों की विशेष सार्थकता तथा आवश्यकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत ग्रंथ लिखा गया है। विश्वास है, प्रस्तुत कृति समाज को नई दिशा, गति एवं ऊर्जा प्रदान करने में सफल होगी।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आधुनिक तथा प्राचीन एवं मध्यकालीन आधुनिक साहित्य की समग्र तथा प्रमुख रचनाएँ, एकत्र रचनावली तथा ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशित हुई हैं। प्रत्येक पुस्तकालय के लिए संग्रहणीय हैं।

प्रमुख रचनावली-ग्रन्थावली-समग्र

- **भारतेन्दु ग्रन्थावली** (1 जिल्द) 100
- **हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली** (11 खण्ड) 4400
- **निराला रचनावली** (8 खण्ड) 2400
- **प्रसाद वाङ्मय** (4 खण्ड) 1000
- **सुमित्रानन्दन पन्त ग्रन्थावली** (7 खण्ड) 2275
- **रेणु रचनावली** (5 खण्ड) 2000
- **नागार्जुन रचनावली** (7 खण्ड) 1400
- **परसाई रचनावली** (6 खण्ड) 1800
- **मुक्तिबोध रचनावली** (6 खण्ड) 1800
- **श्रीकान्त वर्मा रचनावली** (4 खण्ड) 2000
- **रघुवीरसहाय रचनावली** 4200
- **दस्तावेज : मंटो** (5 खण्ड) 1500
- **बेनीपुरी ग्रन्थावली** (8 खण्ड) 4000
- **महादेवी साहित्य समग्र** (3 खण्ड) 2000
- **धर्मवीर भारती ग्रन्थावली** (9 खण्ड) 4000
- **बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' काव्य रचनावली** (4 खण्ड) 1500
- **माखनलाल चतुर्वेदी ग्रन्थावली** (10 खण्ड) 4000
- **शिवमंगल सिंह 'सुमन' समग्र** (5 खण्ड) 1750
- **मलयज की डायरी** (3 खण्ड) 1500
- **राजेन्द्र माथुर संचयन** (2 खण्ड) 400
- **महावीरप्रसाद द्विवेदी रचनावली** (15 खण्ड) 4500
- **चन्द्रधर शर्मा गुलेरी रचनावली** (2 खण्ड) 500
- **सियारामशरण गुप्त रचनावली** (5 खण्ड) 1000
- **रामकुमार वर्मा एकांकी रचनावली** (4 खण्ड) 1000
- **रामकुमार वर्मा नाटक रचनावली** (3 खण्ड) 600
- **लक्ष्मीनारायणलाल एकांकी रचनावली** (2 खण्ड) 500
- **सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : सम्पूर्ण गद्य रचनाएँ** (4 ख.) 500
- **रामकुमार भ्रमर रचनावली** (3 खण्ड) 750
- **प्रतापनारायण मिश्र रचनावली** (4 खण्ड) 1050
- **अमृतलाल नागर रचनावली** (12 खण्ड) 2400
- **रांगेय राघव ग्रन्थावली** 7500
- **देवकीनंदन खत्री समग्र** (1 जिल्द) 100
- **वृन्दावनलाल वर्मा समग्र** (7 खण्ड) 610
- **नरेश मेहता** (सम्पूर्ण काव्य, 2 खण्ड) 600
- **प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ** (2 खण्ड) 400
- **रामदरश मिश्र रचनावली** (14 खण्ड) 6500

प्राचीन तथा मध्यकालीन साहित्य

- **द्विजेन्द्र ग्रन्थावली** *विद्यानिवास मिश्र* 200
- **कबीर वाङ्मय : रमैनी, साखी, सबद** (3 खण्ड) *डॉ० जयदेव सिंह व डॉ० वासुदेव सिंह* 340
- **कबीर समग्र** (2 खण्ड) *डॉ० युगेश्वर* 235
- **जसवन्त सिंह ग्रन्थावली** *सं० पं० विश्वनाथ मिश्र* 150
- **जायसी ग्रन्थावली** *सं० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल* 125
- **सूरसागर** (भाग 1-2) *आचार्य नंददुलारे वाजपेयी* 400
- **तुलसी ग्रन्थावली** (रामचरितमानस) भाग-1 *रामचन्द्र शुक्ल* 60
- **तुलसी ग्रन्थावली** (मानसेत्तर एकादशा ग्रन्थ) भाग-2 *रामचन्द्र शुक्ल* 75
- **तुलसी ग्रन्थावली** (भाग-3) *लाला भगवानदीन* 150
- **तुलसी ग्रन्थावली** (भाग-4) *लाला भगवानदीन* 150
- **दादूदयाल ग्रन्थावली** *परशुराम चतुर्वेदी* 200
- **नन्ददास ग्रन्थावली** *सं० बाबू ब्रजरत्नदास* 200
- **नरोत्तमदास ग्रन्थावली** *पं० विश्वनाथ मिश्र* 50
- **नागरीदास ग्रन्थावली** (दो भागों में) *सं० डॉ० किशोरीलाल गुप्त* 200
- **पृथ्वीराज रासो** (दो भागों में) *श्यामसुन्दरदास* 700
- **बोधा ग्रन्थावली** *सं० पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र* 150
- **भूषण ग्रन्थावली** *श्यामबिहारी मिश्र व शुकदेवबिहारी मिश्र* 75
- **कृपाराम ग्रन्थावली** *सुधाकर पाण्डेय* 100
- **सोमनाथ ग्रन्थावली** (3 खण्ड) *सुधाकर पाण्डेय* 550
- **रसलीन ग्रन्थावली** *सं० पं० सुधाकर पाण्डेय* 200
- **रहीम ग्रन्थावली** *सं० विद्यानिवास मिश्र व गोविन्द रजनीश* 125
- **रसखान रचनावली** *विद्यानिवास मिश्र व सत्यदेव मिश्र* 125
- **भूषण ग्रन्थावली** *विश्वनाथप्रसाद मिश्र व विद्यानिवास मिश्र* 175
- **आलम ग्रन्थावली** *सं० विद्यानिवास मिश्र* 175
- **देव की दीपशिखा** *सं० विद्यानिवास मिश्र* 45
- **मीराँ ग्रन्थावली** (2 खण्ड) *कल्याणसिंह शेखावत* 350

इतिहास, राजनीति, संस्कृति
सन्दर्भ ग्रन्थ

- **सावरकर समग्र** (5 भाग) 2500
- **मेरी संसदीय यात्रा** (4 खण्ड) *अटलबिहारी वाजपेयी* 2000
- **नयी चुनौती : नया अवसर** *अटलबिहारी वाजपेयी*
- **क्रान्तिकारी कोश** (5 खण्ड) *श्रीकृष्ण सरल* 1500

म.म.पं. गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थ

- **मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन)** 300
- **तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि** 100
- **साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग** (भाग 1-2) 80
- **साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग** (भाग 3) 50
- **तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र-साधना** *रमेशचन्द्र अवस्थी* 50
- **परातंत्र साधना पथ** (गोपीनाथ कविराज) 40
- **योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा** 250
- **श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग** (कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित) 20
- **भारतीय धर्म साधना** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
- **तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन** 15
- **ज्ञानगंज** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 60
- **कविराज प्रतिभा** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 64
- **दीक्षा** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 60
- **श्री साधना** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 50
- **स्वसंवेदन** 50
- **प्रज्ञान तथा क्रमपथ** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
- **तांत्रिक साधना और सिद्धान्त** 120
- **श्रीकृष्ण प्रसंग** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
- **काशी की सारस्वत साधना** 35
- **शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी** 100
- **भारतीय संस्कृति और साधना** (भाग-1) 200
- **भारतीय संस्कृति और साधना** (भाग-2) 120
- **सनातन-साधना की गुप्तधारा** 100
- **अखण्ड महायोग** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 50
- **क्रम साधना** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 60
- **भारतीय साधना की धारा** 30
- **परमार्थ प्रसंग** (प्रथम खण्ड) 150
- **अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान** 20

पं. गोपीनाथ कविराज समकालीन संत-महात्मा

- **सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन** *नंदलाल गुप्त* 160
- **श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग** 20
- **योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा** *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
- **पुराणपुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी** *सत्यचरण लाहिड़ी* 120
- **नीम करौरी के बाबा** *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 12
- **शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान** *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
- **सोमबारी महाराज** (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50
- **Purana Purusha Yogiraj Sri Shhyama Charan Lahiree** *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400
- **श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद** 100
- **आत्मबोध** *श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल* 30
- **श्रीमद्भगवद्गीता** (3 खण्डों में) " 375
- **योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी** *शिवनारायण लाल* 150

पं. अरुणकुमार शर्मा के ग्रन्थ

- **मारणपात्र** 250
- **तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी** 180
- **वह रहस्यमय कापालिक मठ** 180
- **मृतात्माओं से सम्पर्क** 200
- **परलोक विज्ञान** 300
- **कुण्डलिनी शक्ति** 250
- **तीसरा नेत्र** (भाग-1) 250
- **तीसरा नेत्र** (भाग-2) 300
- **मरणोत्तर जीवन का रहस्य** (भाग-1) 35

सन् 2001 में प्रकाशित प्रमुख ग्रन्थ

उपन्यास

तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120
पांचाली (नाथवती अनाथवत्) *बच्चन सिंह* 125
ननकी *बच्चन सिंह* (पत्रकार) 100
लोकऋण *विवेकी राय* 80
बबूल *विवेकी राय* 40
रेत की इक्क मुट्ठी *गुरदयाल सिंह* 85
गुड़िया का घर *जीलानी बानो* 85
अविनश्वर *आशापूर्णा देवी* 80
जमीन अपनी तो थी *जगदीशचन्द्र* 225
अग्निस्नान एवं अन्य उपन्यास *राजकमल चौधरी* 295
मता-ए-दर्द *रज़िया फ़सीह अहमद* (*अनु. सुरजीत*) 225
श्यामास्वप्न *जगन्मोहन सिंह* 95
हमको दियो परदेस *मृणाल पांडे* (*अनु. मधु बी. जोशी*) 150
तबादला *विभूतिनारायण राय* 150
खलीफों की बस्ती *शिवकुमार श्रीवास्तव* 295
कादम्बरी *बाणभट्ट* (*उपन्यासान्तरण : राधावल्लभ त्रिपाठी*) 195
ततः किम *मीराकान्त* 125
बिढ़ार *भालचन्द्र नेमाड़े* (प्रकाशनाधीन)
शक्कर *कु. चिन्नप भारती* (प्रकाशनाधीन)
पवलाई *कु. चिन्नप भारती* (प्रकाशनाधीन)
गोबर गणेश *रमेशचन्द्र शाह* (प्रकाशनाधीन)
जेन आयर *शार्लेक ब्रांटे* (प्रकाशनाधीन)
सरधना की बेगम *रंगनाथ तिवारी* (प्रकाशनाधीन)
पांचजन्य *गजेन्द्रकुमार मिश्र* (प्रकाशनाधीन)
इच्छामृत्यु *शिवशंकर* (प्रकाशनाधीन)
पारसमणि *सौ० शुभांगी भडभडे* 300
गलत ट्रेन में *श्रीमती आशापूर्णा देवी* 100
अग्निपंख *श्रीमती सूर्यबाला* 150
भूख *श्रीमती चित्रा मुद्गल* 125
गूँज *महावीरप्रसाद अकेला* 200
अपराजेय *श्यामसुंदर भट्ट* 250
जो नहीं लौटे *नरोत्तम पाण्डेय* 200
हल्दीघाटी का योद्धा *सुशीलकुमार* 150
प्रतीक्षिता *श्रीमती सुषमा अग्रवाल* 200
द्रोण की आत्मकथा *मनु शर्मा* 300
कर्ण की आत्मकथा *मनु शर्मा* 350
गांधारी की आत्मकथा *मनु शर्मा* 350
कृष्णा *युगेश्वर* 200
डॉलर बहू *श्रीमती सुधा मूर्ति* 200
कसौटी *सन्हैयालाल ओझा* 400
मैं अपराधी हूँ *कृष्णा अग्निहोत्री* 400
संतानें जाग उठीं *वीरेन्द्र पाण्डेय* 300
तूफानी रातें *वीरेन्द्र पाण्डेय* 150
वसन्ती भूमि के हज़ार मील *वीरेन्द्र पाण्डेय* 150
गठन *राजकृष्ण मिश्र* 300
दंगा *राजकृष्ण मिश्र* 300
विघटन *राजकृष्ण मिश्र* 300
मैं और मैं *मृदुला गर्ग* 250
गिरमिटिया गाँधी *गिरिराज किशोर* 300
उजाले की तलाश *शरद पगारे* 240
बैगम जैनाबादी *शरद पगारे* 250
क्याप *मनोहरश्याम जोशी* 150
चतुरंग *शैलेन्द्र सागर* 395
शरम *सलमान रूश्दी* 250
अशुभ वेला *समरेश मजूमदार* 395
खिड़की से झाँकता है कौन ? *राजकुमार सैनी* 150
आवां (पुरस्कृत) *चित्रा मुद्गल* 500
सेनापति पुष्यमित्र-1 अभिषेक *सुशीलकुमार* 350
सेनापति पुष्यमि-2 अश्वमेध *सुशीलकुमार* 350
नानी *द्रोणवीर कोहली* 300
स्वराज्य *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 390
वर्जित फल *भीमसेन त्यागी* 100
बाँध-वध *राजेश जैन* 160
लाजो *शान्ताकुमार* 90
मन के मीत *शान्ताकुमार* 80
भारतायण (महाभारत के पात्रों पर आधारित उपन्यास) *शांतिलाल भण्डारी* 175
कनक छड़ी *संतोष शैलजा* 100
दूसरा कृष्ण *डॉ० युगेश्वर* 125
एक सा संगीत *विक्रम सेठ* 295
(*An Equal Music* का हिन्दी अनुवाद)
अनु. मोजेज माइकल
कथा सतीसर *चन्द्रकान्ता* 350
शेष कादम्बरी *अलका सरावगी* 150
शादी से पेशतर *शर्मिला बोहरा* 125
तिरोहित *गीतांजलि श्री* 150
अमृत संचय *महाश्वेता देवी, अनु. सुशील गुप्ता* 225
जली थी अग्निशिखा *महाश्वेता देवी* *अनुवादक : रामशंकर द्विवेदी* 125
चार कन्या *तसलीमा नसरनी, अनु. मुनमुन सरकार* 195
टूटे घोंसले के पंख *रामकुमार मुखोपाध्याय* *अनु. मुनमुन सरकार* 125
एक नौकरानी की डायरी *कृष्ण बलदेव वैद्य* 225
निवेदिता *दशरथ ओझा* 200
पर्वत से सागर तक *शैलेश मटियानी* 125
कितने पाकिस्तान *कमलेश्वर* 250
औरतें *खुशवन्त सिंह* 250

संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा डायरी, यात्रा

अक्षरों की रासलीला *अमृता प्रीतम* 125
पत्राचार (पत्र-संकलन) *सम्पा. बिन्दु अग्रवाल* 125
हमको लिख्यौ है कहा *सम्पा. कमलेश अवस्थी* 380
याद आते हैं (संस्मरण) *रमानाथ अवस्थी* 80
एक बूँद सहसा उछली (यात्रा-वृत्तान्त) *अज्ञेय* 140
दीपक जले शंख बजे (संस्मरण) *कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'* 40
आत्मकथा (4 भाग) *हरिवंशराय बच्चन* 725
क्या खोया : क्या पाया (जीवनी और कविताएँ) *अटलबिहारी वाजपेयी* 125
आवारा मसीहा (पुरस्कृत) *विष्णु प्रभाकर* 175
टुकड़े-टुकड़े दास्तान *अमृतलाल नागर* 175
हिमाल यात्रा *कृष्णनाथ* 100
कुमाऊँ यात्रा *कृष्णनाथ* 100
किन्नौर यात्रा *कृष्णनाथ* 125
आस्था पुरुष *प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद* 150
कृतं भवति सर्वत्र *उमाशंकर* 100
घर की बात *रामविलास शर्मा* 75
कही न जाय का कहिए *भगवतीचरण वर्मा* 125
धुंध से उठती धुन *निर्मल वर्मा* 250
कथा-शेष *ज्ञानचन्द जैन* 295
स्मृतिशेष *शिवपूजन सहाय* 100
याद हो कि न याद हो *काशीनाथ सिंह* 175
पर्वत से सागर तक *शैलेश मटियानी* 125
अपनी धरती अपने लोग (3 खण्ड) *रामविलास शर्मा* 500
मेरा संघर्ष (हिटलर की आत्मकथा) *सं. रामचन्द्र वर्मा शास्त्री* 250
रसीदी टिकट *अमृता प्रीतम* 90
मैं जसदेव सिंह बोल रहा हूँ *जसदेव सिंह* 250
विष्णु प्रभाकर : सम्पूर्ण यात्रावृत्त (2 खण्ड) *विष्णु प्रभाकर* 800
विष्णु प्रभाकर : सम्पूर्ण संस्मरण (2 खण्ड) *विष्णु प्रभाकर* 400
कैलास मानसरोवर *तरुण विजय* 35
सिंधु दर्शन *तरुण विजय* 35
यात्रा-चक्र *धर्मवीर भारती* 295
मलयज की डायरी (3 खण्ड) *सं. नामवर सिंह* 1500
बिरसा मुण्डा और उनका आन्दोलन *कुमार सुरेश सिंह* 300
जब मैं राष्ट्रपति था *आर० वेंकटरामन* 300
अग्नि की उड़ान *ए०पी०जे० अब्दुल कलाम* 200
भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय *सं० डॉ० चन्द्रकला पाडिया* 150
सरदार माने सरदार *डॉ० गुणवन्त शाह* 20
आचार्य नरेन्द्रदेव : युग और नेतृत्व *मुकुटबिहारी लाल* 50
अंतरंग संस्मरणों में 'प्रसाद' *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 150
भारत-भूषण महामना पं० मदनमोहन मालवीय *डॉ० उमेशदत्त तिवारी* 100
जो छोड़ गये : वे भी रहेंगे *शंकरदयाल सिंह* 40
मेरा बचपन : मेरा गाँव, मेरा संघर्ष : मेरा कलकत्ता *रामेश्वर टाँटिया* 50
वे दिन वे लोग *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 60
बढ़ते कदम-बदलते आयाम *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 250
चित्र और चरित्र *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
मुझे विश्वास है *विमल मित्र* 60

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

रसाभिव्यक्ति

डॉ० दशरथ द्विवेदी

150.00

कला शिव-शक्ति का समुल्लास है। आनन्द इसका सहजात धर्म है। नृत्य, चित्र, सङ्गीत, शिल्प तथा काव्य सभी में यह शाश्वत रूप से अनुस्यूत है। आनन्द का अपर पर्याय रस है। आचार्य भरत से लेकर पण्डितराज जगन्नाथ तक संस्कृत काव्यशास्त्र के सभी आचार्य किसी न किसी रूप में रस की चर्चा करते हैं। प्रातिभ कवि की रससिद्ध रचना में रस समर्पण का केन्द्र बिन्दु होते हैं गुण। गुणों का निखार सुव्यवस्थित रीति या मार्ग में ही सम्भव है। इसीलिये संस्कृत काव्यशास्त्र के पूर्वाचार्यों ने इन पर प्रभूत प्रकाश डाला है। वक्रोक्ति सिद्धान्त के अद्वितीय आचार्य कुन्तक की काव्य-तत्त्वविवेचनपद्धति अपूर्व है। यह अपूर्वता उनकी वक्रोक्तिजीवितम् में अभिव्याप्त है। प्रतीयमान अर्थ का अवलाप किये बिना भी समग्र ध्वनिप्रपञ्च का विचित्राभिधा वक्रोक्ति में समाधान तथा रससमेत सभी काव्यतत्त्वों की उनकी नूतन व्याख्या अनायास ही मन को छू लेती है।

रस तत्त्व की सम्यक् व्याख्या आचार्य अभिनवगुप्त निरूपित इस प्रक्रिया में ही पूर्ण होती है। अभिनवगुप्त की प्रखर प्रतिभा से सभी विद्वान परिचित हैं। रसाभिव्यक्ति में तीन शोध-पत्रों रीति-गुण, वक्रोक्ति और अभिनवगुप्त निरूपित रसप्रक्रिया का समावेश किया गया है। अन्त में प्रकृतोपयोगी दो महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट जोड़े गये हैं। प्रथम है—डॉ० रान्योरो नोली का भारतीय रस विचार और द्वितीय है—अभिनव भारती समेत नाट्यशास्त्र का रसाध्याय।

अन्तर के आंगन से

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

200.00

कवि-प्रज्ञा की सहज अभिव्यक्ति गीतों के माध्यम से ही होती है। गीतेतर काव्यरूपों में जीवन के वाह्यार्थ की अभिव्यक्ति की सम्भावना अधिक होती है, अन्तस् का रस-चैतन्य व्यक्त नहीं हो पाता। पाठक कवि के आंगन के आलोक से अपरिचित ही रह जाता है।

'अन्तर के आंगन से' में कवि के एक सौ गीत संगृहीत हैं। कवि के शब्दों में—"मैं अपने गीतों से अभिन्न हूँ। इनमें मेरा वितत अभिव्यक्त है, आनुभूतिक कांति संकुलता अनुस्यूत है। इन गीतों में मेरा अपना रंग है, अपनी जमीन है, अपनी खुशी, अपनी पीड़ा, अपनी पलकों का दुलार है, अश्रुपूर्ण स्वप्नीली आँखों में जिजीविषा की ललक है, पूर्णत्व की अभीप्सा है।"

विश्वविद्यालयों का निजीकरण

विश्वविद्यालयों का निजीकरण नहीं होना चाहिए, क्योंकि निजीकरण के नाम पर केवल व्यवसाय हो जाता है। तेजस्विता के साथ उच्च शिक्षा की चुनौतियों व समस्याओं का कैसे समाधान हो? इसके लिए चिन्तन की आवश्यकता है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में अद्यतन विषयों का अध्ययन-अध्यापन होना जरूरी हो गया है। इसलिए हमें पाठ्यक्रमों में बदलाव कर उसमें अद्यतन विषयों व नयी खोजों तथा जानकारियों का समावेश करना होगा।

किसी भी प्रकार की चुनौती प्रगति का प्रतीक और प्रत्युत्तर ही है। यदि हम प्रत्युत्तर न दे पाये तो अधोगति ही होगी। भारत में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो शिक्षा की भूमिका है। उन चुनौतियों पर हमें विचार करना होगा।

आधुनिक मानसिकता विचित्र है। विषयों का चयन बाजार के द्वारा निर्धारित हो रहा है। बाजार में जिसका महत्त्व होता है, उस क्षेत्र में विद्यार्थियों की संख्या सबसे अधिक होती है।

विश्व में नित्य नये अनुसंधान हो रहे हैं। विज्ञान में आज हुए अनुसंधान अगले पाँच वर्षों के बाद पुराना हो जाता है। उसके स्थान पर नये तथ्य उद्घाटित हो जाते हैं।

—विष्णुकान्त शास्त्री
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **दिसम्बर 2001** **अंक : 12**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिन्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in